GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

शिक्षण व्यवसाय–सम्मान विवसता या विकल्प

प्रोफेसर डॉ0 सुषमा पाण्डेय

प्रोफेसर शिक्षा संकाय

दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

आर0एम0 इण्गरेसोन एवं ऐलिजाबेथ के अनुसार – कोई व्यवसाय, दक्षतापूर्ण प्रशिक्षण, लाइसेन्सिंग, धनात्मक कार्य भी क्षेत्र सक्रिय व्यावसायिक संगठन एवं उच्च स्तरीय सामाजिक व व्यवसाय सम्मान की अपेक्षा रखता है। डी0 हाल एवं बी0 लैगथन (2000) के अनुसार किसी भी व्यवसाय की प्रस्थिति तीन बातों से तय होती है – शक्ति/अधिकार धन एवं सम्मान एवं द्वितीय कारक है – प्रशिक्षण प्रशिक्षण, दक्षता एवं अन्य लोगों पर पड़ने वाला प्रभाव। देखने में तो शिक्षण बहुत ही मूल्यवान एवं सम्मानजनक व्यवसाय माना जाता है। शिक्षण व्यवसाय में स्तर विद्यार्थियों के आयु स्तर से प्रभावित है और इसी प्रकार से शिक्षको क स्तर भी निर्मित हो जाता है। अधिकांशतः शिक्षक अपने व्यक्तिगत स्तर पर तो शिक्षा जगत में अपने मूल्यवान सहयोग के कारण सम्मान, पर विश्वास में मूल्य, प्रशंसा एवं वश आता है परन्तु सम्पूर्ण शिक्षक समूह को एक व्यावसायी के रूप में अपेक्षित सम्मान नही मिल पाता है। भारतीय समाज में माता पिता एवं गुरू वे तीन स्तम्भ बतायें गये है जिनका सम्मान एवं सानिध्य सम्पूर्ण मानव जीवन के सार्थकता के आधार माने गये। गुरू को ईश्वर से भी गुरू को ईश्वर से भी बड़ा स्थान व शिक्षण को एक सम्मानजनक, परमार्थ एवं आध्यात्मिक कार्य का स्थान प्रदान किया गया। वैदिक युग से वर्तमान तक का शिक्षण व्यवसाय का अतीत वास्तव में बहुत ही चुनौतीपूर्ण एवं दिलचस्प रहा। शिक्षण ने समय–समय पर अपना स्वरूप व उद्देश्य बदलें परन्तु यह व्यवसाय भारत में अग्रेंजों के आगमन से पूर्व एक सम्मान जनक व सबसे अधिक प्रतिभाशाली व्यक्तियों के रूचि का बना रहा। वैदिक युग से जैन युग, बौद्ध युग, मुस्लिम युग में भी शिक्षण व्यावसाय के प्रति रूझान अपने चरम स्तर पर बना रहा। समाज ने इस व्यवसाय को चयनीत करने हेतु एक उच्च आदर्श, व्यक्तितत्व एवं उच्च चरित्रयुक्त व्यक्ति की संकल्पना रखी और धीरे–धीरे समय के परिवर्तन के साथ शिक्षा के उद्देश्यों के बदलने व समाज के आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा के स्वरूप को ढालने का दबाव बनने लगा। शिक्षा आदर्शवादी से प्रयोजनवादी हो गयी, शिक्षण एक परमार्थ कार्य से व्यवसाय में परिवर्तित होने लगी। शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण में परिर्वतन होने लगा, व्यवसाय का रूप ग्रहण करते ही इसकी तुलना अन्य व्यवसाय से होने लगी और शिक्षण व्यवसाय ने अपना आकर्षण खोने लगा और इसके अनेक कारण हो सकते है। अतः यह जानने की आवश्यकता अनुभव हुई कि वर्तमान समय में शिक्षण व्यवसाय के प्रति कार्यरत शिक्षकों एवं युवाओं का क्या रूझान है और यह समय काल परिस्थिति के अनुसार कितना परिवर्तित हो गया है।

अध्ययन के उद्देश्य – चयनित अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है –

1. विभिन्न दशकों के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति रूझान का अध्ययन करना।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

2. पुरातन तथा वर्तमान शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान के मध्य अन्तर ज्ञात करना।
3. पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय चयन करनें के कारणों का अध्ययन करना।

परिकल्पना – निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप निम्नलिखित परिकल्पनायें निर्मित की गयी–

1. पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान में सार्थक अन्तर है।
2. पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय चयन करनें के कारणों में भी सार्थक अन्तर है।

शोध प्रविधि – चयनित अध्ययन हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श– अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श का प्रयोग करते हुये गोरखपुर, प्रतापगढ़, लखनऊ मेरठ, के 80 के दशक के एवं वर्तमान में कार्यरत 2038 प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया।

उपकरण –शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान से सम्बन्धित खुली प्रश्नावली का निर्माण शोधकत्री द्वारा स्वयं किया गया।

आकड़ों का संग्रह :– शोधार्थियों द्वारा निर्मित उपकरण को चयनित जिलों के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के कार्यरत एवं अवकाश प्राप्त शिक्षकों पर प्रशासित किया गया। प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कर परिणाम प्रतिशत में प्राप्त किये गये।

परिणाम एंव निष्कर्ष :– प्राप्त परिणामों को उद्देश्यों के आधार पर व्यवस्थित किया जायेगा एंव उनकी बिन्दुवार व्याख्या की गई है।

उद्देश्य 1– विभिन्न दशकों के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति रूझान का अध्ययन करना।

शिक्षण के प्रति रूझान को ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता द्वारा 90 के दशक के एवं वर्तमान में कार्यरत 2038 प्राथमिक शिक्षकों पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान से सम्बन्धित प्रश्नावली का प्रशासन किया गया जिसमें निम्न परिणाम प्रदर्शित हुये–

सारिणी – 1

क्रम सं0	आवश्यक कथन	90 के दशक के शिक्षक(प्रतिशत)	वर्तमान समय में कार्यरत (प्रतिशत)
1.	प्रथम विकल्प के रूप में	83	26
2.	द्वितीय विकल्प के रूप में	13	33
3.	अन्तिम विकल्प के रूप में	04	41
4.	शिक्षण के प्रति रूचि	91	51
5.	अन्य व्यवसायों के प्रति आकर्षण	92.6	93.9
6.	शिक्षण व्यवसाय को अधिकतम समर्पण	87.4	53
7.	शिक्षण व्यवसाय को आकर्षण रूप में	84.6	7.8

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

8.	शिक्षण व्यवसाय को सुविधाजनक स्वरूप	89.3	89.8
9.	शिक्षण व्यवसाय प्रति में सुगमता	88.7	66.4
10.	शिक्षण व्यवसाय में संलग्नता की आवश्यकता	83.6	74.2
11.	शिक्षण व्यवसाय के प्रति आकर्षण	96.3	56.4
12.	शिक्षण व्यवसाय प्राप्ति हेतु प्रयास	56	89
13.	शिक्षण व्यवसाय में बने रहने हेतु इच्छा	89	56
14.	दूसरे विकल्प चयन की इच्छा	16.9	76.5
15.	शिक्षण में आनन्द की अनुभूति	68.7	33.4
16.	शिक्षण एक चुनौतीपूर्ण व्यवसाय के रूप में	40.3	60.8
17.	आकर्षक वेवन का प्रावधान	36.4	80.4
18.	सामाजिक एवं व्यावसायिक सम्मान	33.9	43.3

व्याख्या –उपरोक्त सारिणी में 30 दशकों के अन्तर में कार्यरत शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान को प्रदर्शित किया गया है। 83 प्रतिशत से अधिक 30 के दशक के शिक्षकों ने शिक्षण को प्रथम विकल्प के रूप में चयन किया जबकि 26 प्रतिशत वर्तमान में कार्यरत शिक्षकों से शिक्षण व्यवसाय को प्रथम विकल्प के रूप में चयन किया और 41 प्रतिशत वर्तमान में कार्यरत अध्यापकों के अनुसार शिक्षण व्यवसाय को चयन करने के अतिरिक्त अन्य विकल्प नहीं था। 80 दशक के 91 प्रतिशत व वर्तमान के दशक के 51प्रतिशत शिक्षकों ने शिक्षण व्यवसाय के प्रति अपनी रूचि प्रदर्शित की।वर्तमान में 93 प्रतिशत से अधिक शिक्षकों ने स्वीकार किया कि उन्हे अन्य व्यवसायों के प्रति आकर्षण है। जबकि मात्र 12 प्रतिशत पुरातन शिक्षकों ने इस तथ्य को स्वीकार किया।37 प्रतिशत पुरातन व 53 प्रतिशत वर्तमान के दशक के शिक्षकों ने शिक्षण व्यवसाय के प्रति अपने को समर्पित माना है। 34 प्रतिशत से अधिक पुरातन शिक्षक एवं मात्र 17.8 प्रतिशत ही वर्तमान शिक्षक शिक्षण व्यवसाय को आकर्षक मानते है। 39 प्रतिशत से अधिक पुरातन एवं नवीन शिक्षक इस व्यवसाय को सुविधाजनक मानते है उनके अनुसार इस व्यवसाय में कम दायित्व उठाना पड़ता है एवं जवाब देही कम है। 83 प्रतिशत पुरातन एवं 74 प्रतिशत से अधिक वर्तमान समय के शिक्षकों ने माना की शिक्षण व्यवसाय में संलग्न होने की आवश्यकता होती है। 96 प्रतिशत पुरातन एवं 46.5 प्रतिशत वर्तमान शिक्षकों ने शिक्षण व्यवसाय के प्रति अपना आकर्षण स्वीकार किया वही 53.5 प्रतिशत वर्तमान शिक्षको के अनुसार उन्हें शिक्षण व्यवसाय में आकर्षण नहीं प्रतीत होता है। 56 प्रतिशत पुरातन एवं 89 प्रतिशत वर्तमान शिक्षकों ने स्वीकार किया कि उन्होने इस व्यवसाय में आने का प्रयास किया। 94 प्रतिशत पुरातन शिक्षकों के अनुसार उस समय इस व्यवसाय में आना सरल था।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

मात्र 17 प्रतिशत पुरातन शिक्षकों ने ही स्वीकार किया कि उन्हें कभी दूसरे व्यवसाय को विकल्प के रूप में चयन करने की इच्छा हुयी वही वर्तमान के 16.5 प्रतिशत शिक्षक नवीन विकल्प के चयन हेतु प्रयासरत पाये गये। 68.7 प्रतिशत पुरातन एवं 33.4 प्रतिशत वर्तमान शिक्षकों को शिक्षण में आनन्द की अनुभूति होती है इनमें महिला शिक्षिकाओं की संख्या अधिक रही वही 50प्रतिशत से अधिक वर्तमान में कार्यरत शिक्षक अनेक समस्याओं को समक्ष रखते हुए इसे आनन्दपूर्ण कार्य नहीं मानते है। मात्र 40 प्रतिशत पुरातन एवं 60 प्रतिशत से अधिक वर्तमान में कार्यरत शिक्षक शिक्षण को चुनौतीपूर्ण व्यवसाय मानते है उनके अनुसार प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिक सामाजिक जागरूक एवं शिक्षा की बढ़ती मांग ने इस व्यवसाय को चुनौतीपूर्ण बना दिया है क्योंकि शैक्षिक प्रशासन सभी शैक्षिक लक्ष्यों के पूर्ति हेतु शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित करना चाहता है।

उद्देश्य –2 –पुरातन तथा वर्तमान शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान के मध्य अन्तर ज्ञात करना।

शिक्षण के प्रति रूझान को ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता द्वारा 80 के दशक के एवं वर्तमान में कार्यरत 2038 प्राथमिक शिक्षकों पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान से सम्बन्धित प्रश्नावली का प्रशासन किया गया शिक्षण व्यवसाय के प्रति पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों के रूझान से सम्बधित प्रतिक्रियाओं को पृथक–पृथक देखा गया एवं अन्तर ज्ञात किया गया। जिसमें निम्न परिणाम प्रदर्शित हुये–

सारिणी – 2

पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान में अन्तर की सार्थकता की गणना –

शिक्षक	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
पुरातन शिक्षक	31.6	13.5	14.80	.01
वर्तमान शिक्षक	22.6	14.1		

व्याख्या– शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान से सम्बन्धित प्रश्नावली पर दोनों समूह से प्राप्त प्रतिक्रिया की गणना से पुरातन शिक्षकों के प्रति प्रतिक्रियाओं के मध्यमान (31.6) एवं वर्तमान शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं का मध्यमान (22.6) है और इनका क्रान्तिक अनुपात 14.80 प्राप्त हुआ जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। जो यह भी स्पष्ट कर रहा है कि शिक्षण व्यसाय के प्रति रूझान में पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों के मध्य सार्थक अन्तर है। यह अन्तर मात्र चयन के आधार पर ही नहीं है वरन पुरातन शिक्षकों में इसके प्रति आकर्षण भी रहा जबकि वर्तमान में नियुक्ति शिक्षको को शिक्षण के अतिक्ति भी अन्य व्यवसाय आकर्षित करते है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

सारिणी – 3

पुरातन एवं वर्तमान शिक्षिकाओं के शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान में अन्तर की सार्थकता की गणना –

शिक्षक	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
पुरातन शिक्षिका	31.4	12.3	9.21	.01
वर्तमान में कार्यरत शिक्षिका	22.8	11.4		

व्याख्या– उपरोक्त सारिणी में पुरातन शिक्षिकाओं के प्रतिक्रिया का मध्यमान 31.4 एवं नवीन शिक्षिकाओं के प्रतिक्रियाओं का मध्यमान 22.8 है तथा क्रान्तिक अनुपात 9.21 है। यह इंगित कर रहा है कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति दोनों ही समूह के विचारों में सार्थक अन्तर है। महिलाओं का दृष्टिकोण दोनों ही समूह में शिक्षण व्यवसाय के प्रति पुरूष की अपेक्षा अधिक धनात्मक रहा है। उनके अनुसार शिक्षण व्यवसाय महिलाओं के लिये सबसे अधिक सुरक्षित व्यवसाय है।

उद्देश्य 3 – पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय चयन करनें के कारणों का अध्ययन करना।

शिक्षण के प्रति रूझान को ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता द्वारा 90 के दशक के एवं वर्तमान में कार्यरत 2038 प्राथमिक शिक्षकों पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान से सम्बन्धित प्रश्नावली का प्रशासन किया गया ि पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय चयन करनें के कारणों का अध्ययन से सम्बधित प्रतिक्रियाओं को पृथक–पृथक देखा गया एवं अन्तर ज्ञात किया गया। जिसमें निम्न परिणाम प्रदर्शित हुये–

सारिणी – 4

शिक्षण व्यवसाय चयन के कारकों के सम्बन्ध में अन्तर सार्थकता की गणना –

शिक्षक	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
पुरातन शिक्षक	29.46	13.9	7.44	.01
वर्तमान शिक्षक	23.78	13.10		

उपरोक्त सारिणी 4 में पुरातन शिक्षकों के प्रतिक्रिया का मध्यमान 29.46 एवं नवीन शिक्षकों के प्रतिक्रियाओं का मध्यमान 23.78 है तथा क्रान्तिक अनुपात 7.44 है जो यह इंगित कर रहा है कि पुरातन एवं वर्तमान शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय चयन के कारणों के मध्य सार्थक अन्तर है।

उपरोक्त सारिणीयों में इन सभी परिणामों एवं निष्कर्षों से यह स्पष्ट है कि शिक्षक व्यवसाय वर्तमान में सबसे आसान व्यवसाय का स्वरूप ग्रहण कर चुका है जो कि सम्मान के कारण नहीं विवशता के कारण चयनित किया गया। इसके कई कारण है जिन्हें हमें भविष्य में ध्यान में रखना होगा।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

1. शिक्षण एक खुला व्यवसाय है कोई अन्य व्यवसाय की अधिक जानने व समझने की आवश्यकता नही होती है क्योंकि विद्यालय व शिक्षण दोनों से ही सभी परिचित होते है।
2. प्रत्येक का चयन कर्त्ता को यह भी विश्वास रखता है कि वह वो सब कुछ ज्ञान रखता है जो आवश्यक है या यह भी लगता है कि इसमें बहुत ज्ञान रखने की आवश्यकता नही है।
3. यह व्यवसाय देखने वाले को बहुत ही सरल दिखता है इसीलिये कम परिश्राम करने वाले

लोगो के लिये यह अत्यधिक आकर्षक है। इस व्यवसाय की चुनौतीपूर्ण नही मानते है जिसमें कुछ तय करने या लक्ष्य प्राप्त कराने व लाभ प्राप्त कराने का दबाव हो न ही कोई दायित्व निर्वहन का प्रत्यक्ष दबाव बनाया जाता है अधिकांशः यह देखा जाता है शिक्षक स्वयं ही अपने दायित्व को समझ लेगा। इस व्यवसाय को अन्य व्यवसायों की तुलना में अधिक सुरक्षित मानी जाती है और अधिकांशत प्रतिशत कार्य के घण्टे व शिक्षक छात्र अनुपात निर्धारित किया गया है।

दूसरा पहलू – शिक्षण व्यवसाय को चयन किये सभी स्तर की शिक्षा में शिक्षक हैं जो यह मानता है कि –इस व्यवसाय में व्यावसायिक उत्थान की सम्भावनायें इतनी कम हैं कि यह एकदम मृत प्रायप्रतिशत व्यवसाय लगता है जिसमें कुछ भी नया करने हेतु संस्थागत पर्यावरण नही मिलता है। समाज शिक्षकों से अनेक प्रकार के मूल्यों सहित जीवन एवं सामाज हित से सम्बन्धित कर्तव्यों की अपेक्षा करता है परन्तु स्वयं विद्यालयों को किसी प्रकार का भी सहयोग नही देता है। उसके लिए यह कहा जाता है कि एक व्यवसायी के रूप में डाक्टर से त्रुटि होने वह कथन में दफन हो जाता है। जब से त्रुटि होने पर वह फाइल में दफन हो जाता है परन्तु जब शिक्षक गलती करता है की पूरी पूढ़ी प्रभावित हो जाती है। इस प्रकार की भावनाओं को रखते हुए भी समाज शिक्षक को एक बहुत ही सम्मानजनक स्थान देता है और उसे सामान्य अनुरूप नहीं मानता परन्तु उस अनुरूप सहयोग नही देना चाहता है।

- शिक्षका के लिएशिक्षण व्यवसाय में कर्तव्यों की एक लम्बी सूची है। परन्तु अधिकार की कोई सूची नही है। वह व्यवसाय समाज के द्वारा दिया गया दवाब तनाव असहयोग एवं असम्मान से परिपूर्ण है।
- शिक्षण व्यवसाय के प्रति समाज भी एक नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है और शिक्षक एक स्कूल दोनों के प्रति ही अपना असन्तोष प्रकट करता है।
- चिकित्सा प्रशासनिक दायित्व, वकालत, इन्जिनीयरिंग इत्यादि ऐसे व्यवसाय है जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से समाज पर दिखता है और एक बड़े पैमाने पर उनकी पहचान बनती है। परन्तु व्यक्तिगत प्रयास के अतिरिक्त एक शिक्षक के लिए बहुत बड़े पैमाने पर अपना पहचान बनाना आसान नही होता।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
May-June:2025

- सभी स्तर के शिक्षण व्यवसाय पर अनेक प्रकार के राष्ट्रीय लक्ष्यों और अधिकाशत प्रतिशत शिक्षा से ही सम्बन्धित होते है, को पूरा करने का दबाव रहता है। इसके अतिरिक्त प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर अनावश्यक कार्यों की जिले एवं राज्य स्तर के प्रशासनिक दबावां के अन्तर्गत कराया जाता है। शायद यही कारण है कि विवशता के कारण शिक्षण व्यवसाय चयन करने के पश्चात् भी शिक्षको को उच्च स्तरीय सम्मान नही मिल पाता है।
- भारत में ही नहीं शिक्षण व्यवसाय के प्रति रूझान से सम्बन्धित अनेक अध्यपनों में जैसे Ministry of Education न्यूजीलैण्ड, Ministry of Education Britain इत्यादि के अध्ययनों भी 50 प्रतिशत से अधिक लोगो ने इसे अनाकर्षक व्यवसाय माना है जिसका प्रमुख कारण अत्यधिक कार्यभार एवं विद्यार्थियों के व्यवहार को समझना एवं उसके अनुकूल शिक्षण करने को माना है दूसरी और 35 प्रतिशत धनात्मक प्रतिक्रिया देने वाले शिक्षकों के अनुसार शिक्षण व्यवसाय चुनने का प्रमुख कारण कार्य सनतुष्टि एवं बहुत अधिक अवकाश मिलना है।

सन्दर्भ

1. रिचर्ड एम0ए इंगरशोल एवं एलिजाबेथ एम (2000) : द स्टेटस ऑफ टीचिंग ऐज अ प्रोफेशन, पेंनसियवोनिया विश्वविद्यालय लेख www.reporiory.upenn.edu/cgi/view

2. हाल डी0 एवं लैंण्टन बी0 (2006) : परसेप्शन्स ऑफ दी स्टेटस ऑफ टीचर्स, लेख www.reporiory.upenn.edu/cgi/view